हिन्दी विश्वविद्यालय में **राष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन**

दिन **'जेंडर समानता के लिए जमीनी स्तर पर प्रयास'** विषय पर चर्चा

संस्कृति और सारस्वत का आरंभ भारत की भूमि से हुआ है - प्रवीणा बेन देसाई

वर्धा, 29 मार्च 2019: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र एवं वर्धा के गांधी विचार परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में 'जेंडर समानता की गाँधीवादी दृष्टि **: सामर्थ्य, संभावनाएं एवं. चुनौतियां'** विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन **'जेंडर समानता के लिए जमीनी स्तर पर प्रयास'** विषय पर केन्द्रित चर्चा सत्र की शुरुआत हुई. सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध गाँधीवादी प्रवीणा बेन देसाई ने की. अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रवीणा बेन देसाई ने कहा कि संस्कृति और सारस्वत का आरंभ भारत की भूमि से हुआ है. भारतीय परंपरा के उच्च मूल्यों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यहाँ दोष दर्शन की अपेक्षा गुण दर्शन पर विशेष ज़ोर दिया गया है. महापुरुष की टिका-टिपण्णी के बजाय उनसे गुण ग्रहण करने की आवश्यकता है. इस देश के आध्यात्म के सूर्य का दर्शन गाँधी-विनोबा में होत है. पश्चिम की संस्कृति से हमें कुछ भी सिखने की आवश्यकता नहीं है. गाँधी-विनोबा द्वारा निर्मित स्त्री शक्ति की उन्होंने विस्तृत चर्चा की. इन दोनों महापुरुषों ने निर्भिक और जमीनी स्तर पर काम करने वाली स्त्री नेतृत्व तैयार किया था. स्त्री-पुरुष में भौतिक समानता नहीं है. बावजूद इसके दोनों एक दूसरे के पूरक हैं. उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे अर्थनीति की भी तीखी आलोचना की. आज अर्थशास्त्र के नाम पर अनर्थशास्त्र चलाया जा रहा है, जो मानव सभ्यता के लिए विनाशकारी है. भारत त्याग और सेवा के सहारे खड़ा है. यहाँ त्याग को भोग से ज्यादा महत्व दिया गया है. जबकि आज बाज़ार का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, भोगवाद चरम पर है. यह भारत की आत्मा पर प्रहार है. सत्र का संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया.

सत्र में वक्ता के रूप में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर की डॉ. भारती शुक्ला, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल एवं धर्मपाल शोध पीठ, भोपाल की डॉ. कुसुमलता केडिया मौजूद थी.

सत्र में बीज वक्तव्य रखते हुए डॉ. भारती शुक्ला ने कहा कि जमीनी स्तर पर भारत में स्त्रियों को ढेर सारे आंदोलन चल रहे हैं. स्त्रियों के मुद्दे पर संघर्ष की डगर काफी कठिन है. स्त्रियों के प्रति सत्ता और पुलिस-प्रशासन का रुख भी अत्यंत ही पितृसत्तात्मक बना हुआ है. पूरी सत्तामशीनरी औपनिवेशिक गुलामी से आज भी अनुकूलित है. स्त्रियों के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे वे सही वक़्त पर अपने को अभिव्यक्त करना सीख सकें. उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर लैंगिक समानता के लिए स्त्रियों को जाति-धर्म के आर-पार लामबंद होना होगा. स्त्रियों को अपना नजरिया विकसित करना पड़ेगा, नए तकनीक व औजार गढ़ने होंगे. सांस्कृतिक मूल्य-मान्यताएं स्त्रियों को घेरे रहती हैं. मानसिक श्रम व शारीरिक श्रम के बीच भेदभाव भी स्त्रियों को हीन बनाने के लिए जिम्मेदार है. इसलिए महात्मा गाँधी ने इस खाई को पाटने की कोशिश की थी. अंत में उन्होंने कहा कि स्त्रियों के लैंगिक समानता का आन्दोलन ही दुनिया को बेहतर बना सकता है.

डॉ. कुसुमलता केडिया कहा कि समकालीन स्त्री की बौद्धिक छवि को समझने की जरुरत है. आज यूरो-क्रिस्चियन चिंतन का ही ज्यादा प्रभाव है, इसे भी समझने की ज़रूरत है. समकालीन स्त्री को घर की रानी बनना मंजूर नहीं है. डॉ.शोभा पालीवाल ने कहा कि गाँधी कस्तूरबा के जीवन संघर्ष से हमें काफी प्रेरणा मिलती है. स्त्रियों को कस्तूरबा से सिखाने की जरुरत है. कस्तूरबा ने दक्षिण अफ्रीका से लेकर भारत में समाज परिवर्तन में अहम भूमिका अदा की थी. आज स्त्रियों को सामाजिक स्तर पर रुढ़ियों-विसंगतियों के खिलाफ मजबूती से आवाज़ बुलंद करना जरुरी है.

नागपुर की नारीवादी साहित्यकार प्रेमलता मिश्रमानवे ने अपने लेखन में स्त्री विमर्श की संक्षिप्त चर्चा की. वहीं विभा मेहता ने कहा कि समाज में पुत्री का जन्म आज भी दुखदायी ही माना जाता है, इसे बदलने की ज़रूरत है. लैंगिक समानता का प्रयास हर पल करने की जरुरत है. केवल कानून से सामाजिक परिवर्तन नहीं हो सकता है. इसके लिए सामाजिक-शैक्षणिक स्तर पर प्रयत्न करना आवश्यक है. शीला भार्गव ने कहा कि समस्याओं के समाधान पर हमारा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए. समाज परिवर्तन का गंभीरतापूर्वक प्रयास चलाया जाना चाहिए.

आभार ज्ञापन डॉ.सुप्रिया पाठक ने किया. संगोष्ठी में देश के दर्जनों विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं शोधार्थियों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं शोधार्थी बतौर प्रतिभागी उपस्थित थे.

मा. संपादक/संवाददाता महोदय,

कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें। धन्यवाद।